M.Ed - IV Sem

Educational Management and Administration

(SC-4)

प्रशासन शब्द अंग्रेजी भाषा के Administration शब्द का हिंदी रूपान्तरण है जिसकी व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के minister शब्द से है minister → "सेवा करना"

Administration → दूसरो की सेवा करना (अपने अधीनस्थ लोगो की सेवा प्रभावशाली ढंग से करने की कला है)

दूसरा शब्द

Administer है जिसका अर्थ होता है to manage (प्रबन्धन करना) or to serve (सेवा करना) या to govern (प्रशासन करना)

अतः इस शब्द का प्रयोग जनता के कार्यो को करना तथा देख-भाल से लिया जाता है, इसलिए प्रशासन को एक सेवा तथा सहयोगी कार्य कहा जाता है।

शिक्षा प्रशासन का सम्बन्ध मुख्यतः शिक्षा एवं शिक्षा प्रक्रिया, से ही होता है। शिक्षा के क्षेत्र में व्यवस्था (organization) जिस ढाँचे को खड़ा करता है, शैक्षिक प्रशासन उसे कार्यान्वित करने में सहायक होता है। इतना ही नही बल्कि शिक्षा के सम्बन्ध में योजना बनाना, संगठन पर ध्यान देना, निर्देशन तथा पर्यवेक्षण आदि अनेक कार्यो से इसका गहरा सम्बन्ध है।

शिक्षा के क्षेत्र में अनेक व्यक्ति अपनी-2 भूमिका निभाते है। कक्षा भवन, पुस्तकालय, क्रीडा स्थल, कार्यालय, पाठ्येत्तर क्रियाओं का सफलता पूर्वक संयोजन करना शैक्षिक प्रशासन का ही कार्य है। विद्यालयो के प्रधानाचार्य, प्रबन्धक, शिक्षक, विद्यार्थी अन्य कर्मचारी, जिला विद्यालय निरीक्षक, निदेशक, उपनिदेशक आदि सभी मिलकर शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास करते है।

शिक्षा प्रशासन की परिभाषा :-

"शैक्षिक प्रशासन एक ऐसे सेवा करने वाली गतिविधि है जिसके माध्यम से शैक्षिक प्रक्रिया के लक्ष्य प्रभावशाली ढंग से प्राप्त किये जाते है।"

– फाक्स, विश एवं रफनर

"Educational Administration is a service activity through which the objective of the educational process may be effectively realized." – Facks, wish, & Rufner

"शैक्षिक प्रशासन शैक्षिक संस्थानो का प्रबन्ध है जिसमें अध्यापन एवं अधिगम को ध्यान में रखा जाता है यह एक व्यावहारिक क्षेत्र ही नही अपितु अध्ययन क्षेत्र भी है"।

Scanned by CamScanner

2:- "अन्य प्रशासन की भाँति शैक्षिक प्रशासन पाँच तत्वों - नियोजन, संगठन, आदेश, समन्वय तथा नियन्त्रण की एक प्रक्रिया है।"

- हेनरी फेयोल

"Like other administration, Educational administration is a process of five Elements as - Planning, organising, direction, co-ordination and control"

- Henry Fayol

शिक्षा प्रशासन की प्रमुख विशेषताएँ

(Characteristics of educational Administration)

(i) शैक्षिक प्रशासन एक समन्वित प्रक्रिया है। (Integrated Process) अर्थात इसमें सम्मिलित मौलिक तत्व जैसे नियोजन, संगठन, संचालन, समन्वय, नियंत्रण, मूल्यांकन आदि सभी सम्मिलित रूप से एक दूसरे पर आधारित रूप में कार्य करते हैं।

(ii) शैक्षिक प्रशासन एक मानवीय (Human Process) प्रक्रिया है। जो सामाजिक, राजनीतिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक परिस्थितियों में प्रभावित होती है।

(iii) शैक्षिक प्रशासन की प्रकृति कार्यशील तथा नियन्त्रित होती है (Functional & controlled)

इसके अन्तर्गत यह स्पष्ट है कि कार्य की प्रकृति यांत्रिक तथा स्वचालित न होकर कार्यशील एवं नियन्त्रित होती है।

(iv) शैक्षिक प्रशासन का स्वरूप केन्द्रीयकरण व विकेन्द्रीयकरण दो रूपों में होता है।
जैसे - फ्रांस में केन्द्रीयकरण प्रशासन तथा अमेरिका में विकेन्द्रीय करण प्रशासन अपनाया गया है जैसे दोनों देशों में प्रजातन्त्र प्रणाली को अपनाया गया है।

(v) शैक्षिक प्रशासन का स्वरूप सदैव गतिशील (Dynamic) होता किसी भी राष्ट्र में शैक्षिक प्रशासन की संरचना किसी है। भी उस देश के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक आधार पर की जाती है इन तत्वों में परिवर्तन होने के कारण शैक्षिक प्रशासन भी सदैव गतिशील रूप में रहता है।

(vi) शैक्षिक प्रशासन का लक्ष्य विद्यालय की कार्यशैली में सुधार लाना होता है।
शैक्षिक प्रशासन के माध्यम से विद्यालय के अन्तर्गत शिक्षक, छात्र तथा अन्य कार्यकर्ताओं के कार्यों में सुधार लाया जाता है।

Scanned by CamScanner

(vii) शैक्षिक प्रशासन की प्रक्रिया उपयोगिता पर आधारित होती है
शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है इसलिए शैक्षिक प्रशासन द्वारा इस कार्य को उपयोगी व महत्वपूर्ण बनाया जाता है ताकि समाज को समृद्धिशाली एवं उन्नत किया जा सके।

(viii) व्यावहारिकता (Practicability) –
प्रशासन सम्बंधित कार्य व्यावहारिक होने चाहिए न कि सैद्धान्तिक। अतः विद्यालय के उद्देश्य, नीतियाँ, नियम आदि मानवीय तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप होने चाहिए ताकि ये समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकें।

शिक्षा प्रशासन का विकास

Scanned by CamScanner

(vii) शैक्षिक प्रशासन की प्रक्रिया उपयोगिता पर आधारित होती है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है इसलिए शैक्षिक प्रशासन द्वारा इस कार्य को उपयोगी व महत्वपूर्ण बनाया जाता है ताकि समाज को समृद्धिशाली एवं उन्नत किया जा सके।

(viii) व्यावहारिकता (Practicability) –
प्रशासन सम्बंधित कार्य व्यावहारिक होने चाहिए न कि सैद्धान्तिक। अतः विद्यालय के उद्देश्य, नीतियाँ, नियम आदि मानवीय तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप होने चाहिए ताकि वे समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकें।

शिक्षा प्रशासन का विकास
(Development of Educational Administration)

संसार मे जितनी भी संस्थाऐं समूह तथा संगठन है वे सभी प्रशासन के द्वारा गति प्रदान प्राप्त करते है। जन सेवा, वित्त नियंत्रण, कर्मचारी चयन, प्रशिक्षण एवं नियुक्ति आदि के द्वारा उद्देश्यो की प्राप्ति हेतु सभी तत्वो तथा पक्षो का समन्वय किया जाता है। शैक्षिक प्रशासन आज की देन नही है वस्तुतः राज्य की उत्पत्ति के साथ-2 शिक्षा प्रशासन का जन्म हुआ। युग की प्रकृति और आवश्यकता के अनुरूप शैक्षिक प्रशासन की अवधारणा में भी परिवर्तन होते रहे। शिक्षा प्रशासन की अवधारणा के विकास को तीन काल-खण्डो में विभाजित किया गया है।

शिक्षा प्रशासन का परम्परावादी युग –:
शैक्षिक प्रशासन का परम्परावादी युग ज्ञान की संरचना पर आधारित रहा है इस युग में किसी पक्ष द्वारा निर्धारित नीतियों के क्रियान्वयन के लिए कार्य, शक्ति तथा तकनीक का आश्रय लिया जाता रहा है।

1. टेलर के विचार –: परम्परावादी विचारधारा के विकास में टेलर, फेयाल तथा वेबर का विशेष योगदान है। एफ. डब्लू. टेलर को वैज्ञानिक प्रबन्ध का जन्मदाता भी कहा जाता है। टेलर की राय थी कि कर्मचारियो को न तो बहुत अधिक और न ही बहुत कम पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए। इस सम्बंध मे टेलर (Taylor) के विचार निम्न प्रकार है –

Scanned by CamScanner

(a) समय-अध्ययन सिद्धान्त या अधिनियम (Time-study principle) सभी उत्पादन कार्यों का मापन समय द्वारा होनी चाहिए

(b) उत्पादक इकाई पर अधिनयम :- समयानुसार उत्पादक वस्तुओं की मात्रा को गुणवत्ता के अनुपात के अनुपात में श्रम की मजदूरी निर्धारित की जानी चाहिए। श्रमिक को उसकी योग्यता तथा क्षमता के अनुसार अधिकतम तथा उच्चतर स्तर प्रदान किया जाना चाहिए।

(c) नियोजन तथा निष्पत्ति की पृथकता का अधिनियम :- कर्मचारियों से व्यवस्था अपने हाथों में प्रशासकों को ले लेनी चाहिए। नियोजन का दायित्व तथा यथार्थ रूप से निष्पत्ति अपने हाथों में प्रशासन को ले लेनी चाहिए।

(d) कार्य की वैज्ञानिक विधि का सिद्धान्त :- व्यवस्थापकों को उत्तम विधियों का निर्धारण करके श्रमिकों को इनका वैज्ञानिक प्रशिक्षण देना चाहिए। ऐसे सभी दायित्व कर्मचारियों पर न छोड़कर प्रशासन को स्वयं निभाने चाहिएं।

(e) व्यवस्थापक-नियन्त्रण अधिनियम (managerial control Principle) व्यवस्था के वैज्ञानिक सिद्धान्तों तथा नियंत्रण के उपायों के क्रियान्वयन हेतु व्यवस्थापकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

(f) कार्यात्मक व्यवस्था सिद्धान्त (Functional Management Principle) सेना की भाँति कठोर अनुशासन का सिद्धान्त भी औद्योगिक संगठन में अपनाना आवश्यक है, इससे विभिन्न क्रियाओं में समन्वय सम्भव होता है।

मैक्स वेबर के विचार :- मैक्स वेबर ने समाजशास्त्र के क्षेत्र में अनेक नवीन सम्भावनाओं को जन्म दिया तथा शैक्षिक प्रशासन में संगठन की संरचना पर अधिक बल दिया। मैक्स ने प्रशासन में नौकरशाही प्रारूप प्रस्तुत किया। मैक्स के अनुसार उत्तम उपलब्धि तथा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए नौकरशाही प्रारूप से अच्छा कोई विकल्प नहीं है।

नौकरशाही व्यवस्था में व्यक्तिगत सांवेगिक तथा अतार्किक तत्वों एवं कारकों का कोई स्थान नहीं है। इस व्यवस्था में श्रम-विभाजन पाया जाता है। तकनीक क्षमता के आधार पर रोजगार दिये जाते हैं।

3. हेनरी फेयोल के विचार :- हेनरी फेयोल ने प्रशासन को को अनेक तत्वों की शृंखला माना है।

Scanned by CamScanner